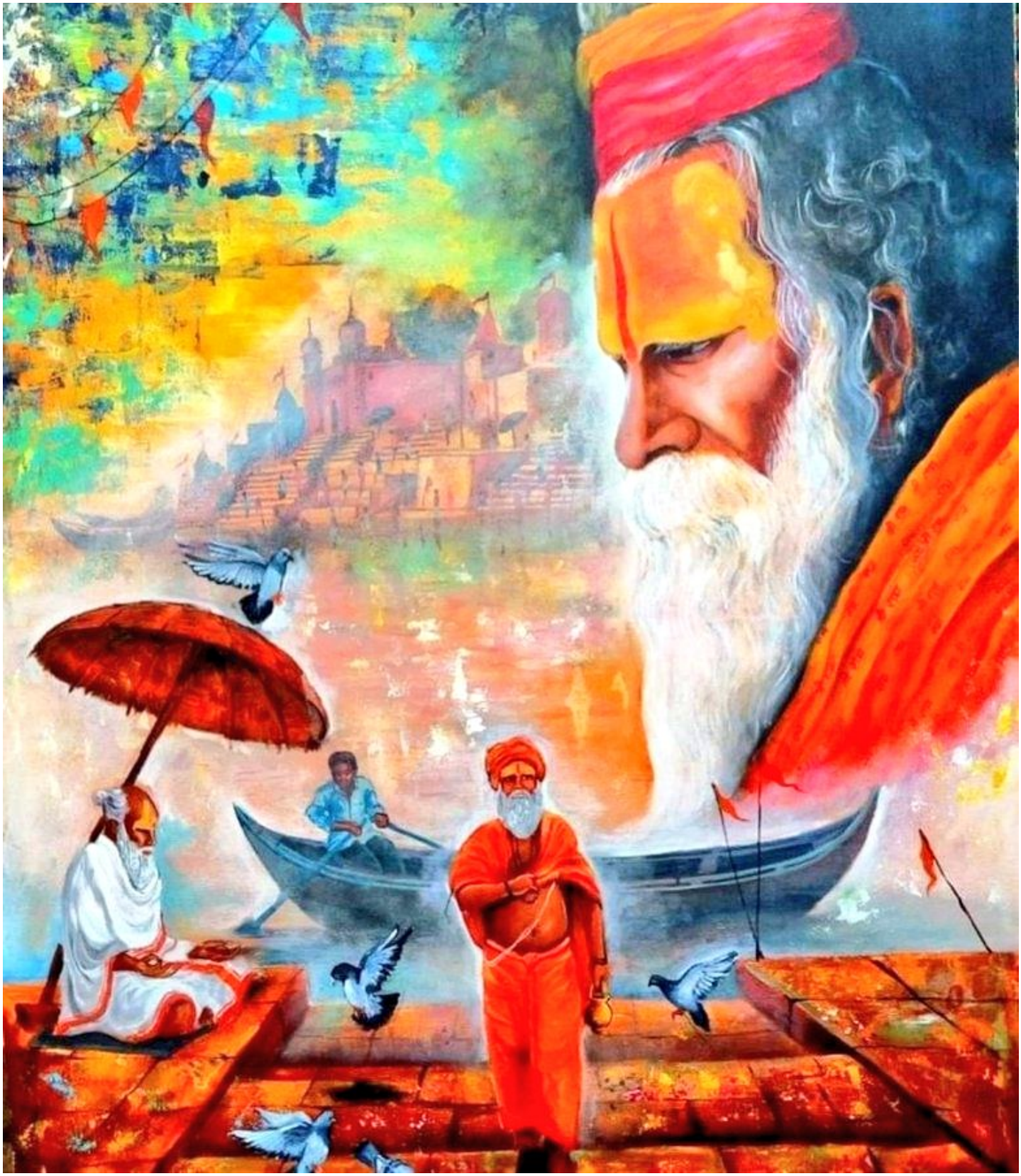
Twitter Thread by Anshul Pandey



Anshul Pandey
@Anshulspiritual

BASIS OF VEDAS COMPILATION.

The deeds or kriyas mentioned in the Vedas is indestructible, but the tradition of Yagya's should not be discontinued. Vedas are the writings of the observations made by the ancient sages.



As this oral tradition developed things started to get disorganized. As per Brahmand Puraan,in Dwapar yug Maharishi Vyas organized them and distributed them amongst his disciples for further clarification. The divisions were compiled from a single Yajurved & divided into 4 parts.

The work of compilation was distributed amongst Jaimini, Sumantu Vaishampayan and Paeel rishis.They came to be known as Rigved, Yajurved, Samved and Atharvaved. The fifth disciple was given the task of of explaining and interpreting the Puraan and their history.

His name was Lomharshan, Whom we commonly know as Sutji.

1. In Rig Ved we mostly find the mantras pertaining to Yagya which can be sung for the worldly good and benefit. Also the importance of Priest emerged from here.



2. In Atharvaved, we find mantras pertaining to Brahmatatva or the spiritual and essential Truth. Here the karmakaand for the Kings was described in detail.

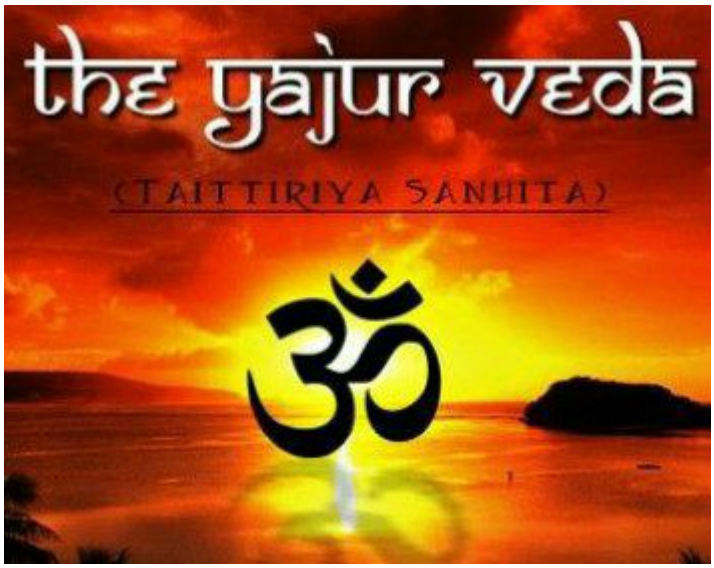


3.Samved:- Whatever part of the above mentioned Vedas was left out,it was compiled as Samved.



4.Yajurved:- Whatever was left from the compilation of Samved, was then compiled in Yajurved. It defines the ways and means of how a Yagya should be conducted.

Thereafter a long tradition of sages followed. In this tradition we find Rishi Yagyavalka who was one of the



most learned Rishi of his time. It is said that he was so sharp that none of the other rishis could answer his questions in King Janaks court. He was declared as the most learned one. Rishi Shakalya challenged him, On loosing had to face death penalty.

https://t.co/m5Q9j9J8yt

> Reason behind division of Vedas in 4 parts as per Bhagwat puran\U0001f447
>
> \u0915\u094d\u0937\u0940\u0923\u093e\u092f\u0941\u0937\u0903
> \u0915\u094d\u0937\u0940\u0923\u0938\u0924\u094d\u0924\u094d\u0935\u093e\u0928\u094d
> \u0926\u0941\u0930\u094d\u092e\u0947\u0927\u093e\u0928\u094d \u0935\u0940\u0915\u094d\u0937\u094d\u092f
> \u0915\u093e\u0932\u0924\u0903\u0964
>
> \u0935\u0947\u0926\u093e\u0928\u094d \u092c\u094d\u0930\u0939\u094d\u092e\u0930\u094d\u0937\u092f\u094b
> \u0935\u094d\u092f\u0938\u094d\u0928\u094d
> \u0939\u0943\u0926\u093f\u0938\u094d\u0925\u093e\u091a\u094d\u092f\u0941\u0924\u091a\u094b\u0926\u093f\u0924\u090
>
> \u091c\u092c \u092c\u094d\u0930\u0939\u094d\u092e\u0935\u0947\u0924\u094d\u0924\u093e
> \u090b\u0937\u093f\u092f\u094b\u0902 \u0928\u0947 \u0926\u0947\u0916\u093e \u0915\u0940
> \u0938\u092e\u092f \u0915\u0947 \u092b\u0947\u0930 \u0938\u0947 \u0932\u094b\u0917\u094b\u0902
> \u0915\u0940 \u0906\u092f\u0941,\u0936\u0915\u094d\u0924\u093f \u0914\u0930
> \u092c\u0941\u0926\u094d\u0927\u093f \u0915\u094d\u0937\u0940\u0923 \u0939\u094b
> \u091c\u093e\u0924\u0940 \u0939\u0948,
>
> 1/3 pic.twitter.com/JQcgda1SKZ
>
> — Anshul Pandey (@Anshulspiritual) June 29, 2020

Source- Brahmand puran

SS attached

अथ ब्रह्माण्डमहापुराणे पूर्वभागे द्वितीय अनुषंग पादे

पञ्चत्रिंशत्तमोऽध्यायः

वेदव्यासाख्यान स्वायम्भुवमन्वतरवर्णनं नाम

सूत उवाच

देवमित्रश्च शाकल्यो महात्मा द्विजपुंगवः। चकार संहिताः पञ्च बुद्धिमान्वेदवित्तमः॥१॥
पञ्च तस्याभवञ्छिष्या मुद्गलो गोखलस्तथा। खलीयान्सुतपा वत्सः शैशिरेयश्च पञ्चमः॥२॥
प्रोवाच संहितास्तिस्रः शाको वैणो रथीतरः। निरुक्तं च पुनश्चक्रे चतुर्थं द्विजसत्तमः॥३॥
तस्य शिष्यास्तु चत्वारः पैलश्चेक्षलकस्तथा। धीमाञ्छ तबलाकश्च गजश्चैव द्विजोत्तमाः॥४॥
बाष्कलिस्तु भरद्वाजस्तिस्रः प्रोवाच संहिताः।
त्रयस्तस्याभवञ्छिष्या महात्मानो गुणान्विताः॥५॥
धीमांश्च त्वापनापश्च पान्नगारिश्च बुद्धिमान्। तृतीयश्चार्जवस्ते च तपसा शंसितव्रताः॥६॥
वीतरागा महातेजाः संहिताज्ञानपारगाः। इत्येते बहूवृचाः प्रोक्ताः संहिता यैः प्रवर्तिताः॥७॥
वैशंपायनशिष्योऽसौ यजुर्वेदमकल्पयत्। षडशीतिस्तु तेनोक्ताः संहिता यजुषां शुभाः॥८॥
शिष्येभ्यः प्रददौ ताश्च जगूहुस्ते विधानतः। एकस्तत्र परित्यक्तो याज्ञवल्क्यो महातपाः॥९॥
षडशीतिस्तथा शिष्याः संहितानां विकल्पकाः।
सर्वेषामेव तेषां वै त्रिधा भेदाः प्रकीर्त्तिताः॥१०॥

श्री ब्रह्माण्डमहापुराण पूर्वभाग द्वितीय अनुषंग पाद

अध्याय–३५

वेदव्यासाख्यान स्वायंभुवमन्वतर वर्णन

सूत जी बोले कि वेदज्ञों में सर्वश्रेष्ठ, द्विजपुङ्गव देवों के मित्र परम बुद्धिमान् महात्मा शाकल्य ने वेद की पाँच संहिताओं की रचना की।।१।। उनके पाँच शिष्य हुये वे हैं—मुद्गल, गोखल, खलीय, मत्स्य और पाँचवे शैशिरेय।।२।। द्विजश्रेष्ठ शाकल्य ने शाक, वैणी और रथीतर तीन संहिताओं का प्रणयन किया। द्विजश्रेष्ठ शाकवैणी स्थीतर ने तीन संहिताओं का प्रणयन किया, फिर चौथे निरुक्त का प्रणयन किया।।३।। उनके पैल, चेक्षलक, बुद्धिमान्, तवलाक और गज ये चार द्विजश्रेष्ठ शिष्य थे। बाष्कलि पुत्र भरद्वाज ने तीन संहिताओं का प्रवचन किया, उन महात्मा के गुणान्वित तीन शिष्य हुए।।५।। पहला बुद्धिमान् आपनाम था, दूसरा बुद्धिमान् पान्नगारि था और तीसरा तप से प्रशंसित व्रत वाला आर्जव था।।६।। ये तीनों शिष्यगण, वीतराग, महातेजस्वी और संहिताओं के पारङ्गत ऋषि थे। इन्होंने बहुत सी संहिताओं का प्रवर्तन किया। इसीलिए उन्हें बह्वृच कहा गया।।७।।

वैशम्पायन शिष्य ने यजुर्वेद की कल्पना की। उन्होंने यजुर्वेद की छः शुभसंहिता का प्रवचन किया और फिर उन्होंने उन संहिताओं को विधानपूर्वक अपने शिष्यों को प्रदान किया तथा शिष्यों ने विधानतः ग्रहण किया। उनमें केवल महातपस्वी याज्ञवल्क्य को छोड़ दिया।।८-९।। तथा ८६ शिष्य संहिताओं के विकल्पक हुए और उन सबके

अनित्यभावाद्देवानां मन्वोत्पत्तिः पुनः पुनः। द्वापरेषु पुनर्भेदाः श्रुतीनां परिकीर्तिताः॥८५॥
एवं वेदं तदाप्यस्य भगवानृषिसत्तमः। शिष्येभ्यश्च प्रदत्त्वा तु तपस्तप्तुं वनं गतः॥८६॥
तस्य शिष्यप्रशिष्यैस्तु शाखाभेदास्त्विमे कृताः।
अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः॥८७॥
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्याश्चेमाश्चतुर्दश। आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति ते त्रयः॥८८॥
अर्थशास्त्रं चतुर्थं तु विद्या ह्यष्टादशैव हि। ज्ञेया ब्रह्मर्षयः पूर्वं तेभ्यो देवर्षयः पुनः॥८९॥
राजर्षयः पुनस्तेभ्य ऋषिप्रकृतयस्त्रिधा। काश्यपेषु वसिष्ठेषु तथा भृग्वङ्गिरोऽत्रिषु॥९०॥
पञ्चस्वेतेषु जायन्ते गोत्रेषु ब्रह्मवादिनः। यस्मादृषन्ति ब्रह्माणं ततो ब्रह्मर्षयः स्मृताः॥९१॥
धर्मस्याथ पुलस्त्यस्य क्रतोश्च पुलहस्य च। प्रत्यूषस्य च देवस्य कश्यपस्य तथा पुनः॥९२॥
देवर्षयः सुतास्तेषां नामतस्तान्निबोधत। देवर्षी धर्मपुत्रौ तु नरनारायणभुवौ॥९३॥
बालखिल्याः क्रतोः पुत्राः कर्दमः पुलहस्य तु। कुबेरश्चैव पौलस्त्यः प्रत्यूषस्य दलः सुतः॥९४॥
नारदः पर्वतश्चैव कश्यपस्यात्मजावुभौ। ऋषन्ति वेदान्यस्मात्ते तस्माद्देवर्षयः स्मृताः॥९५॥
मानवे चैव ये वंशे ऐलवंशे च ये नृपाः। ये च ऐक्ष्वाकनाभागा ज्ञेया राजर्षयस्तु ते॥९६॥

प्रकार शाखाभेद समान रूपसे आश्रित हैं। प्रजापति ब्रह्मा द्वारा बनायी गयी श्रुतियां (वेदसाहित्य) नित्य हैं। इसके विकल्प ये ही कहे जाते हैं।।८४।। देवों के अनित्य (नाशशील) होने के कारण बार-बार मन्वों की उत्पत्ति होती है। ये जो भेद कहे गये हैं, वे द्वापर युग में श्रुतियों के भेद कहे गये हैं।।८५।। इस प्रकार वेदों का विभाग करके ऋषि श्रेष्ठ भगवान् व्यास अपने शिष्यों को सौंपकर तप करने के लिये वन को चले गये।।८६।। उसके बाद उनके शिष्यों और प्रशिष्यों ने इन शाखा भेदों का इस प्रकार विभाग किया। श्रुतियों के छः अंग (शिक्षा, कला, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योति) चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद), मीमांसा (पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा) और न्याय धर्मशास्त्र और पुराण ये चौदह विद्याये हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्र इन चारों को मिलकर अठारह प्रकार की विद्यायें हैं।।८७-८८½।। अब ऋषियों के विषय में बताते हैं।

सर्वप्रथम ब्रह्मर्षि को जानना चाहिये दूसरे स्थान पर देवर्षि हैं और फिर उनके बाद राजर्षियों को जानना चाहिये। इस प्रकार ऋषियों की तीन प्रकृतियां हैं।।८८½-८९½।। काश्यप वशिष्ठ, भृगु, अंगिरा और अत्रि इन पाँच ऋषियों के गोत्रों में ब्रह्मर्षि पैदा होते हैं। ब्रह्मर्षि शब्द का अर्थ है कि जो ब्रह्म की खोज करते हैं। ब्रह्म को प्राप्त करते हैं अथवा ब्रह्म को देखते हैं, वे ब्रह्मर्षि कहलाते हैं।।८९½-९१।। धर्म, पुलस्य, क्रतु, पुलह, प्रत्यूष, प्रभास और कश्यप के पुत्रों को देवर्षि कहा जाता है। उनके नाम सुनये—धर्म के दो पुत्र राजर्षि नर और नरायण हैं।।९२-९३।। बालखिल्यगण क्रतु के पुत्र हैं। कर्दम पुलह के पुत्र हैं। कुबेर पुलस्त्य के पुत्र हैं तथा दल को प्रत्यूष का पुत्र कहा गया है।।९४।। नारद और पर्वत ये दोनों कश्यप के पुत्र हैं। ऋषन्ति देवान् देवताओं तक पहुँचते हैं, इस अर्थ के कारण वे देवर्षि कहे गये हैं। ब्रह्मा के अनुसार—ऋषन्ति वेदान् अर्थात् जो वेदों का अनुसंधान करते हैं, वे देवर्षि कहे जाते हैं। यही अर्थ उचित है।।९५।। जो मानववंश ऐलवंश में जो राजागण पैदा हुए अर्थात् मनु से इला में जो पैदा हुए वे ऐल कहे गये। अतः उस वंश में पैदा होने वाले इक्ष्वाकु पुत्र ऐक्ष्वाकु और नाभाग को राजर्षि जानना चाहिये।।९६।।

ऋषन्ति रञ्जनाद्यस्मात्प्रजा राजर्षयस्ततः। ब्रह्मलोकप्रतिष्ठास्तु स्मृता ब्रह्मर्षयोऽमलाः॥९७॥
देवलोकप्रतिष्ठास्तु ज्ञेया देवर्षयः शुभाः। इन्द्रलोकप्रतिष्ठास्तु सर्वे राजर्षयो मताः॥९८॥
अभिजात्याऽथ तपसा मन्त्रव्याहरणैस्तथा। ये च ब्रह्मर्षयः प्रोक्ता दिव्या देवर्षयश्च ये॥९९॥
राजर्षयस्तथा चैव तेषां वक्ष्यामि लक्षणम्।
भूतं भव्यं भवज्ज्ञानं सत्याधि व्याहृतं तथा॥१००॥
सन्तुष्टाश्च स्वयं येतु सम्बुद्धा येच वै स्वयम्। तपसेह प्रसिद्धा ये गर्भे यैश्च प्रवेदितम्॥१०१॥
मन्त्रव्याहारिणो ये च ऐश्वर्यात्सर्वगाश्च ये। एते एते राजर्षयो युक्ता देवद्विजनृपाश्च ये॥१०२॥
एतान्भावानधिगता ये वैत ऋषयो मताः। सप्तैते सप्तभिश्चैव गुणैः सप्तर्षयः स्मृताः॥१०३॥
दीर्घायुषो मन्त्रकृत ईश्वराद्दिव्यचक्षुषः। बुद्धाः प्रत्यक्ष धर्माणोगोत्रप्रावर्त्तकाश्च ते॥१०४॥
षट्कर्मनिरता नित्यं शालीना गृहमेधिनः। तुल्यैर्व्यवहरन्ति स्म ह्यदुष्टैः कर्महेतुभिः॥१०५॥
अग्राम्यैर्वर्त्तयन्ति स्म रसैश्चैव स्वयंकृतैः। कुटुम्बिनो बुद्धिमन्तो वनान्तरनिवासिनः॥१०६॥
कृतादिषु युगाख्यासु सर्वैरेवपुनः पुनः। वर्णाश्रमव्यवस्थानं क्रियते प्रथमं तु वै॥१०७॥
प्राप्ते त्रेतायुगमुखे पुनः सप्तर्षयस्त्विह। प्रवर्त्तयन्ति ये वर्णानाश्रमां श्चैव सर्वशः॥१०८॥
तेषामेवान्वये वीरा उत्पद्यन्ते पुनः पुनः। जायमाने पितापुत्रे पुत्रः पितरि चैव हि॥१०९॥

राजर्षि शब्द का अर्थ है—प्रजाओं को रंज (सुखी रखने) के कारण जो प्रजाओं तक पहुँचते हैं, वे राजर्षि कहे जाते हैं। अर्थात् प्रजाओं को आनन्दित करने का अनुसन्धान करते हैं, वे राजर्षि हुए।। जो ऋषिगण ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, वे अमल ब्रह्मर्षि कहे गये हैं।।९७।। जो देवलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, वे शुभ देवर्षि कहे जाते हैं। इन्द्रलोक में प्रतिष्ठा तो सब राजर्षियों की मानी गयी है।।९८।। अच्छे कुल में उत्पन्न, तपस्या अथवा मन्त्रों की व्याख्या जो दिव्यगुण वाले राजर्षि करते हैं, वे भी ब्रह्मर्षि कहे गये हैं।।९९।। अब जो राजर्षि हैं, उनका मैं लक्षण बताऊँगा। भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमानकाल का ज्ञान रखने वाले तथा सत्य पर रहने वाले, स्वयं पर सन्तुष्ट रहने वाले, स्वयं को जानने वाले, इस संसार में तपस्या से प्रसिद्ध तथा जिन्हें गर्भ में प्रकृष्ट रूप से ज्ञान हो गया है तथा जो मन्त्रों के जानने वाले हैं तथा जो ऐश्वर्य से सर्वत्र गमन करने वाले हैं, वे सब देवता, ब्राह्मण अथवा राजा ही क्यों न हों, राजर्षि कहे जाते हैं।।१००-१०२।। जिन्होंने इन भावों को प्राप्त कर लिया है, वे ऋषि माने गये हैं। दीर्घायु सम्पन्न मन्त्रकर्ता, ऐश्वर्यशाली, दिव्यदृष्टि सम्पन्न, ज्ञानी, प्रत्यक्ष, धर्मात्मा और गोत्र को चलाने वाले ये जो गुण हैं, इन सात गुणों से युक्त ऋषिगण सप्तर्षि कहे गये हैं।।१०३-१०४।। वे ऋषिगण सर्वदा छः कर्मों में (यज्ञ करना कराना, पढ़ना-पढ़ाना, दान देना लेना) में लगे रहते थे, शालीन गार्हस्थ्याश्रयी थे, सज्जनों के साथ समानतापूर्ण व्यवहार करने वाले अपने द्वारा अपने ही में आनन्द लेने वाले अर्थात् आत्म ज्ञान से सबके साथ शिष्ट व्यवहार करते थे। वे कुटुम्बी, बुद्धिमान् तथा वन में निवास करने वाले थे।।१०५-१०६।। सतयुग आदि युगों में सबसे पहले वे ऋषिगण बार बार वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था स्थापित करते हैं।।१०७।। पुनः त्रेतायुग में प्रारम्भ होने पर वे ही सप्तर्षिगण इस पृथ्वी पर सर्वत्र वर्ण और आश्रमों का पुनः प्रचलन करते हैं।।१०८। उन्हीं ऋषियों के वंश में वीरपुरुष पुनः पुनः उत्पन्न होते हैं। पुत्र के पैदा होने में पिता और पिता में पुत्र ऐसा उस काल में था। अर्थात् पिता

Facebook link■
https://t.co/ARWJ4FQXVs

Instagram link■
https://t.co/S08F7WqMIR